70

ग्रेट कमीशन

(28:16-20)

सुसमाचार का मत्ती का विवरण ग्रेट कमीशन के दिए जाने से खत्म होता है जो कि संसार के सब लोगों को चेला बनाने के लिए यीशु के प्रेरितों से की गई पुकार है। मत्ती ने यरूशलेम में अपने जी उठने के बाद यीशु द्वारा दिए गए अपने प्रेरितों को दर्शनों या स्वर्ग में उसके उठाए जाने को शामिल नहीं किया। उसका फोकस विश्वव्यापी इवैंजलिज्म यानी सुसमाचार पर था जो कि समान रूप से यहूदियों और अन्यजातियों के उद्धार के लिए है।

पृष्ठभूमि (28:16, 17)

16और ग्यारह चेले गलील में उस पहाड़ पर गए, जिसे यीशु ने उन्हें बताया था। 17और उन्होंने उसके दर्शन पाकर उसे प्रणाम किया, पर किसी-किसी को सन्देह हुआ।

आयत 16. संयोजक **और** (*de*) यहूदी अगुओं और सिपाहियों द्वारा पहले फैलाई गई इस झूठी खबर से उस सच्चाई को अलग करता है। कितनी अजीब खुशी और आश्चर्य हुआ होगा जब यह विश्वास करने पर कि यीशु जी उठा है प्रेरितों का शोक खत्म हो गया हो! इस बात से अनजान की आगे क्या होगा, उन्होंने स्वर्गदूत की कही बातों और यीशु की ओर से स्त्रियों को दिए गए संदेश को मान लिया (28:7, 10)। **ग्यारह** जिनमें अब यहूदा उनके साथ नहीं था (27:5) गलील में गये जहां यीशु ने उनसे कहा था कि वह उनकी प्रतीक्षा करेगा। उन्हें अभी भी इसकी समझ नहीं थी परन्तु उसके लिए उनका वास्तविक काम आरम्भ होने वाला था।

प्रेरित एक विशेष **पहाड़ पर गए, जिसे यीशु ने उन्हें बताया था।** प्रभु ने उन्हें अपनी मृत्यु से पूर्व दिए गए निर्देशों में बताया होगा कि कौन सा पहाड़ है (26:32)। फिर उसने स्त्रियों से बात करते हुए भी बताया होगा कि कौन सा पहाड़ है (28:10)। मत्ती में पहाड़ियां और पहाड़ प्रकाशन और परमेश्वर के साथ सहभागिता के स्थान हैं (5:1; 14:23; 15:29; 17:1; 21:1)। इस पहाड़ पर यीशु ने प्रेरितों को ग्रेट कमीशन दिया।

आयत 17. यीशु को देखकर प्रेरितों ने **उसे प्रणाम किया,** जैसे स्त्रियों ने किया था (28:9); परन्तु इकट्ठा हुए समूह में से **किसी किसी को संदेह हुआ** (*distazō*)। संदेह करने वालों का एक दूसरा विचार लेते हुए आर. टी. फ्रांस ने उस क्रिया शब्द पर जोर दिया जिसका इस्तेमाल हुआ था: "क्रिया शब्द *distazō* अविश्वास के खत्म हो जाने का संकेत नहीं बल्कि अनिश्चितता और हिचकिचाहट की स्थिति है (तु. 14:31, नये नियम में इसका एकमात्र और इस्तेमाल है)।"[1] प्रेरितों को स्त्रियों की गवाही पर धीरे धीरे विश्वास आया था कि उन्होंने जी उठे प्रभु को देखा है (लूका 24:11)। इसलिए यीशु ने उन्हें अपने हाथ और अपने पांव दिखाते हुए

और उनके सामने मछली खाते हुए अपने जी उठने का पक्का प्रमाण दिया (लूका 24:39–43; देखें यूहन्ना 20:24–29)। निश्चय ही संदेह करने वाले लोग गलील के रहने वाले थे जिन्हें जी उठे मसीह को देखने का अवसर नहीं मिला था।

यीशु का कमीशन (28:18-20)

यीशु लोगों को "उनके शास्त्रियों के समान नहीं परन्तु अधिकारी के समान" (7:29). उपदेश देता था। उसने लकवे के एक रोगी को चंगाई देकर पाप क्षमा करने के अपने अधिकार को दिखाया था (9:2–8)। पृथ्वी पर रहते हुए उपदेश देने, चंगाई देने और पाप क्षमा करने का उसका अधिकार उसे पिता की ओर से दिया गया था (11:27; देखें 21:23–27)। यीशु ने बारह चेलों को सीमित आज्ञा देकर भेजा था और उन्हें "अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकाले और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें" (10:1)। एक बार फिर वह उन्हें बाहर भेज रहा था; परन्तु इस बार उद्धार का सम्पूर्ण संदेश लेकर सारे संसार में जाना था।

"सारा अधिकार" (28:18)

[18]यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।

आयत 18. यीशु ने घोषणा की, "**स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।**" उसके कहने का अर्थ था कि पिता ने उसे सर्वोच्च अधिकार दिया है। उसे उसके पिता द्वारा मसीही युग का प्रभु बनने के लिए चुना गया था। बाद में पौलुस ने कहना था, "इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान किया और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है" (फिलिप्पियों 2:9)। आज धर्म में सब कुछ "उसके नाम में" या उसके अधिकार से होना आवश्यक है। उसके पुनरुत्थान से पहले ऐसा नहीं था (यूहन्ना 15:16; 16:23–26), परन्तु मानवीय इतिहास के इस अन्तिम युग में ऐसा ही है (लूका 24:46, 47; प्रेरितों 2:38; 4:12; कुलुस्सियों 3:17)। यीशु अति महान बनने के कारण परमेश्वर के दाहिने हाथ ऊपर उठा लिया गया (22:44; 26:64; प्रेरितों 2:34–36; फिलिप्पियों 2:9–11)। वह सिहांसन पर बैठकर उसके राज्य पर राज कर रहा है (1 कुरिन्थियों 15:24–28); वह अपनी कलीसिया के ऊपर सिर है (इफिस्सियों 1:20–23; कुलुस्सियों 1:18)।

"सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ" (28:19)

[19]इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।

आयत 19. सारा अधिकार अपने पास होने के कारण यीशु ने अपने प्रेरितों से कहा, "**इसलिए तुम जाकर ... चेला बनाओ।**" यूनानी कृदंत जिसका अनुवाद "जाकर" हुआ है

इसका अर्थ ''जब तुम जा रहे हो'' या ''जाते जाते'' हो सकता है। परन्तु जैसा कि यहां है ''चेला बनाओ'' के अवश्य माननीय शब्द को कृदंत से मिलाने पर इसमें अवश्य माननीय का बल मिल जाता है।[2] मौरिस ने इसे इस प्रकार कहा है: ''यीशु अपने चेलों को जाने के साथ-साथ चेला बनाने की आज्ञा दे रहा था, चाहे जोर चेला बनाने पर पड़ता है।''[3]

''चेला बनाओ'' (*mathēteuō*) का अर्थ लोगों को सिखाना और उन्हें मसीह के अनुयायी बनने में अगुआई करना है। चेला बनने में यीशु में केवल व्यक्तिगत भरोसा ही नहीं बल्कि उसके नैतिक मापदण्डों के आगे समर्पण करने की इच्छा भी है।

यीशु ने **सब जातियों के लोगों** के अपने दर्शन को अपने प्रेरितों को आगे दिया। लिमिटेड कमीशन में उसने प्रेरितों को केवल ''इस्राएल के घराने ही की खोई हुई भेड़ों'' के पास जाने को कहा गया था यानी उन्हें ''अन्यजातियों की ओर'' जाने या ''सामरियों के किसी नगर में प्रवेश'' करने की मनाही थी (10:5, 6)। इस कमीशन में सुसमाचार का संदेश सब लोगों के लिए है (मरकुस 16:15)।

''जातियों'' के लिए यूनानी शब्द (*ethnos* से) का अनुवाद आम तौर पर ''अन्यजातियां'' (4:15; 6:32; 10:5, 18; 12:18, 21) अर्थात उन लोगों के रूप में किया जाता है, जो इस्राएल से अलग हैं। यहां पर इस शब्द में इस्राएल शामिल है। ग्रेट कमीशन के एक और वृत्तांत में जिसे लूका ने लिखा है, यीशु ने कहा कि ''*यरूशलेम से लेकर सब जातियों* में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा'' (लूका 24:47)। सुसमाचार सबसे पहले यरूशलेम में यहूदियों को सुनाया गया था (प्रेरितों 1-7) और बाद में यह यहूदिया, सामरिया (प्रेरितों 8; 9), और पूरे रोमी साम्राज्य में फैल गया (प्रेरितों 10-28)।

मत्ती के सुसमाचार के वृत्तांत का आरम्भ अब्राहम से यीशु के वंशानुगत सम्बन्ध स्थापित करने से हुआ (1:1, 2)। इस्राएल के लोगों के अस्तित्व में आने से पहले परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा दी थी कि उसके वंश के द्वारा सब जातियों ने आशीष पाएंगी (उत्पत्ति 12:3; 22:18)। यह प्रतिज्ञा यीशु की ओर आगे को देखती थी जो सब लोगों के लिए उद्धार को स्पष्ट करता है (गलातियों 3:8, 16)। पुरानी वाचा में परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपने विशेष लोगों के रूप में चुना। परन्तु नई वाचा में परमेश्वर के लोगों की पहचान ''जाति के आधार पर नहीं बल्कि उसके मसीहा के द्वारा परमेश्वर के साथ सम्बन्ध पर है (देखें ... 3:9; 8:11-12; 12:21; 21:28-32, 41-43; 22:8-10; 24:14, 31; 26:13)।''[4]

चेले बनाने का एक भाग उन्हें **बपतिस्मा** देना है। बपतिस्मा (पानी में डुबकी) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई का महत्वपूर्ण भाग था, जिसमें वह लोगों को मन फिराने और आने वाले राज्य के लिए तैयार होने का निमन्त्रण देता था (3:6 पर टिप्पणियां देखें)। यीशु द्वारा स्वयं बपतिस्मा लेने के बाद उसकी सेवकाई यूहन्ना की सेवकाई पर भारी पड़ने लगी: ''यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता है, और उन्हें बपतिस्मा देता है (यद्यपि यीशु आप नहीं, बरन उसके चेले बपतिस्मा देते थे)'' (यूहन्ना 4:1, 2)। अपने प्रेरितों को चेले बनाने की प्रक्रिया में लोगों को बपतिस्मा देने की यीशु की आज्ञा उसके सुनने वालों के लिए कोई बड़ा आश्चर्य नहीं होनी थी।

ग्रेट कमीशन का बपतिस्मा यूहन्ना और यीशु के चेलों द्वारा पहले दिए जाने वाले बपतिस्मे से अलग था। उसके बाद से यीशु क्रूस पर मर गया था और कब्र में से जी उठा था। प्रेरितों का पूर्ण

रूप में सुसमाचार पहली बार सुनाने और ग्रेट कमीशन का बपतिस्मा देने पर राज्य (कलीसिया) आ चुका था (प्रेरितों 2)।

कोई भी व्यक्ति जिसे सिखाया गया हो और वह क्रूस पर चढ़ाए और जी उठे प्रभु में विश्वास लाया हो वह बपतिस्मा लेने के योग्य है। उस व्यक्ति को पहले मन फिराना अर्थात पाप से मुड़कर परमेश्वर की ओर मुड़ना आवश्यक है (लूका 13:3, 5; प्रेरितों 2:38)। मन फिराव के बाद उसे इस विश्वास का अंगीकार करना आवश्यक है कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है (प्रेरितों 8:37; रोमियों 10:9, 10)। विश्वास के अंतिम कार्य के रूप में उसे बपतिस्मा दिया जाता है (प्रेरितों 2:38)।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि बपतिस्मा ''पापों की क्षमा के लिए या [निमित]'' है (प्रेरितों 2:38), समर्पण के इस विनम्रतापूर्वण कार्य के लिए वह क्रूस पर मसीह की बलिदान पूर्वक मृत्यु की आशिषें पाता है। यीशु ने कहा, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:16)। बपतिस्मा स्पष्ट रूप में उद्धार की एक पूर्व शर्त है। बपतिस्मा के द्वारा व्यक्ति मसीह (रोमियों 6:3, 4) और उसकी कलीसिया में (1 कुरिन्थियों 12:13) आता है और पवित्र आत्मा का दान पाता है (प्रेरितों 2:38)।

ग्रेट कमीशन का बपतिस्मा **पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से** होना आवश्यक है। यह वाक्यांश त्रिएकता का संक्षिप्त विवरण है (3:17 पर टिप्पणियां देखें)। ''नाम'' के लिए यूनानी शब्द (*onoma*) एकवचन है जो परमेश्वर की एकता की ओर ध्यान दिलाता है। त्रिएकता के तीन व्यक्ति को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में पहचाना जाता है (देखें 1 कुरिन्थियों 12:4-7; 2 कुरिन्थियों 13:14; इफिसियों 4:4-6; 1 पतरस 1:2; यहूदा 20, 21)।

सामान्य विचार चाहे स्पष्ट है परन्तु इस वाक्यांश के संक्षिप्त अर्थ पर बहुत बहस हुई है। क्या यह एक फॉर्मूला है जिसे बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति को सुनाया जाना आवश्यक है? ऐसा करना चाहे सही है पर प्रेरितों के काम की पुस्तक में मसीही बनने वालों को ''यीशु मसीह के नाम से'' (प्रेरितों 2:38; 10:48) या ''प्रभु यीशु के नाम में'' (प्रेरितों 8:16; 19:5) बपतिस्मा दिया गया बताया जाता है।

इस कारण यह आवश्यक है कि यह वाक्यांश बपतिस्मे के पीछे के अधिकार की ही बात करता है। ''के नाम से'' का अर्थ है ''के अधिकार से।'' परमेश्वरत्व में कोई फूट नहीं मिलती इस कारण ग्रेट कमीशन और प्रेरितों के काम की पुस्तक के ऐतिहासिक दस्तावेज़ में कोई विरोधाभास नहीं है।

अनुवादित उपसर्ग ''से'' या ''में'' के यूनानी शब्द (*eis*) का अर्थ है ''में।'' ''के नाम में'' का अर्थ त्रिएक परमेश्वर के अधीन होने का संकेत है। यहां पर इस वाक्यांश का सम्बन्ध विश्वासी की नई निष्ठा और परमेश्वर के साथ सम्बन्ध है।

उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ (28:20)

20और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।

आयत 20. बपतिस्मे को एक नये आरम्भ के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि अन्त के रूप में। यीशु ने प्रेरितों से नये चेलों को **सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है,** मानना सिखाने को कहा। उसने उन्हें कई महत्वपूर्ण सच्चाइयां सिखाते हुए लगभग तीन साल से अधिक समय तक सिखाया था। अपने ऊपर उठाए जाने के बाद उसने उन पर पवित्र आत्मा भेजना था जिसने उन्हें उसकी शिक्षा को याद दिलाना था और उन्हें सारी सच्चाई में अगुआई देनी थी (यूहन्ना 14:26; 15:26, 27; 16:12–15)। यीशु के कमीशन के प्रति प्रेरितों की वफ़ादारी के साथ-साथ नये चेले बनाने की बात प्रेरितों के काम की पुस्तक में दर्ज है: "वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे" (प्रेरितों 2:42)।

"मैं सदैव तुम्हारे संग हूं" (28:20)

[20]और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।

आयत 20. यीशु ने ग्रेट कमीशन का समापन अपनी बनी रहने वाली उपस्थिति की प्रतिज्ञा के साथ किया: "**और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।**" मसीही युग का अन्त तब होगा, जब मसीह वापस आएगा और स्वर्ग में अनन्त जीवन आरम्भ होगा। तब तक यीशु अपने चेलों के साथ रहेगा जो उसका काम कर रहे हैं। मत्ती 1:23 में बालक यीशु को "इम्मानुएल" नाम दिया गया था। राज करने वाले हमारे प्रभु के रूप में यीशु अपने चेलों के लिए वही है जो "इम्मानुएल" नाम संकेत देता है, यानी वह "परमेश्वर हमारे साथ" है।[5]

◇◇◇◇◇ **सबक** ◇◇◇◇◇

ग्रेट कमीशन का ग्रेट होना (28:18-20)

हमारे प्रभु ने मत्ती 28:18–20 में अपना ग्रेट कमीशन दिया। इसे "ग्रेट" इसलिए कहा जाता है क्योंकि इससे महत्वपूर्ण कभी कोई मानवीय घोषणा नहीं हुई है। लोगों ने इसे मानवीय शब्दों में लिपटा या नाशवान मनुष्य को दिया अब तक का सबसे पवित्र आदेश करार दिया है। ग्रेट कमीशन कम से कम छह कारणों के कारण "ग्रेट" यानी महान है: (1) इसके पीछे की योजना (इफिसियों 3:8–11), (2) इसके पीछे का अधिकार (7:29; 28:18), (3) इसका विश्वव्यापी होना (28:19; प्रेरितों 26:16–18), (4) लोगों को इकट्ठा करने की इसकी सामर्थ (इफिसियों 2:13–19; 4:4–6), (5) इसका सदा तक रहना (28:20), और (6) प्राण की कीमत पर इसका जोर (16:26)।

ग्रेट कमीशन (28:18-20)

स्वर्ग में अपने पिता के पास लौटने से पहले यीशु के पास पूरा करने के लिए एक अंतिम कार्य था: पृथ्वी पर अपने कामों को आगे बढ़ाने का काम सौंपना। उसके अंतिम आदेश को जिसे आम तौर पर "ग्रेट कमीशन" कहा जाता है पहले प्रेरितों को दिया गया परन्तु इसे "जगत के अन्त तक" (28:20) उसकी कलीसिया के लिए था। इस संदेश का पूरा विवरण एक ही जगह

नहीं दिया गया। यीशु ने अपने पुनरुत्थान और अपने ऊपर उठाए जाने के बीच के चालीस दिनों के समय में अलग अलग बार अलग अलग बातें दीं। इस कमीशन की सारी बातों को पाने के लिए हमें पवित्र आत्मा द्वारा दिए गए विवरणों को मिलाना आवश्यक है (28:18-20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:46-49)।

टिप्पणियां

[1]आर. टी. फ्रांस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू, द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 412. [2]लिमिटेड कमीशन की इस भाषा की तुलना करें: "... जाओ और चलते चलते प्रचार करो" (10:6, 7)। [3]लियोन मौरिस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 746, एन. 30. [4]फ्रांस, 414. [5]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुसेट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 268.

एक सरव़मरी

मत्ती की पुस्तक के हमारे अध्ययन ने जीवन क्या है के महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर देने में हमारी सहायता की है।

यह राजा कौन है, और वह क्यों आया। परमेश्वर का पुत्र संसार में हमारे लिए उद्धार लाने के लिए आया! चिर प्रतीक्षित मसीहा एक कुंवारी से जन्मा, पाप रहित जीवन जिया, क्रूस पर चढ़ाया गया और मुर्दों में जी उठा! पृथ्वी पर से जाने से पहले उसने अपने राज्य के आने का आधार बना दिया। यह राज्य उसके पुनरुत्थान के बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त के दिन आ गया।

फिर आगे क्या हुआ? यीशु वापस आएगा और अन्तिम न्याय होगा। यीशु चाहता है कि हम तैयार हों और उस दिन की तैयारी करें! हमें मसीह के चेले बनना और उसकी शिक्षाओं के अनुसार चलना आवश्यक है जो नये नियम में मिलती है।